'तेरा' वर्ष

निर्विघ्न सप्ताह

27.01.2013

1. **स्वमान** – मैं यज्ञ रक्षक हूँ...विघ्न विनाशक हूँ...।

- भगवान ने यह रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचकर इसकी जवाबदारी हम ब्रह्मावत्सों को दी है, यह हमारा परम सौभाग्य है। इस यज्ञ में सम्पूर्ण पुरानी सृष्टि स्वाहा होनी है और नए युग का सृजन होना है। यह यज्ञ युग-परिवर्तन करने वाला है। सृष्टि के नियंता, हमारे पिता ने सचमुच एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी हमें सौंपी है। इस यज्ञ की रक्षा करना, इसे निर्विध्न बनाना और इसे सम्पूर्णता तक पहुँचाना हम सब ब्राह्मणों का प्रथम कर्त्तव्य है।

- ``जो यज्ञ तुम्हारी सर्व मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाला है, उस यज्ञ की तुम्हें कितने दिल से संभाल व सेवा करनी चाहिए।`` – **बापदादा**

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं विघ्न विनाशक फरिश्ता हूँ...मेरी उपस्थिति सर्व विघ्नों को नष्ट करने वाली है...बाबा से निरंतर शुद्ध व शक्तिशाली किरणें लेकर मैं सर्व के विघ्नों को नष्ट कर रहा हूँ...मैं फरिश्ता बापदादा के साथ संसार के हर कोने में जाकर वहाँ के अपने ब्राह्मण कुलभूषण भाई-बहनों को शुभभावना व शुभकामना का व निर्विध्न बनने का सहयोग प्रदान कर रहा हूँ...सभी सेवाकेन्द्रों को शक्तियों की सकाश दे रहा हूँ...जिससे सभी सेवाकेन्द्र निर्विघ्न और शक्तिशाली बनते जा रहे हैं...।

ब. मैं यज्ञ रक्षक हूँ...बाबा के साथ कम्बाइंड होकर मैं अपने शुद्ध व शक्तिशाली संकल्पों के वायब्रेशन पूरे यज्ञ में फैला रहा हूँ...जिससे यज्ञ रुपी किला निर्विध्न और मजबूत होता जा रहा है...।

3. **धारणा – निर्विकल्प और निर्विध्न स्थिति**

- ``टोटल यज्ञ या चारों ओर क्या-क्या वृद्धि करनी है, सभी ब्राह्मण **निर्विध्न और निर्विकल्प** कैसे बनें, यह प्लैन आपस में सोचो।``– **शिवभगवानुवाच**

- जितना निर्विकल्प अर्थात् श्रेष्ठ स्वमान व संकल्पों में स्थित रहेंगे, उतना ही निर्विघ्न स्थिति बनती जाएगी। बाबा ने कहा है कि जहाँ स्वस्थिति श्रेष्ठ है, वहाँ परिस्थितियाँ अर्थात् विघ्न ठहर नहीं सकते। जहाँ एक के लग्न की अग्नि प्रज्जवलित है, वहाँ विघ्न हो नहीं सकते।

4. **चिंतन** –

- व्यर्थ संकल्प-विकल्प और विघ्नों का कारण क्या है?
- कैसे बने निर्विकल्प और निर्विघ्न स्थिति? व्यक्तिगत व सामूहिक योजना बनायें।

5. **साधकों प्रति** - प्रिय साधकों! यह यज्ञ हमारी माँ है। इस माँ ने हमें जन्म दिया है, पाला, पोसा और बड़ा किया है। जन्म से लेकर अब तक हमारी माँ ने हमारी राजकुमार और राजकुमारियों जैसी पालना की है। उन्होंने हमारी हर मनोकामना पूरी की है। हमें संसार की हर खुशी दी है। उन्होंने हमारे लिए क्या नहीं किया है...हमें क्या नहीं दिया है...ऐसी अपनी यज्ञ-माँ की हम कितनी न सेवा करें...आयें हम सभी भाई-बहनें यह दृढ़ संकल्प करें कि हम निर्विध्न रहेंगे और अपनी यज्ञ-माँ को भी निर्विध्न बनायेंगे...अपनी श्रेष्ठ निर्विकल्प स्थिति बनाकर अपनी माँ की दुवाएँ लेंगे...।